Paper 5
B.A. III (H)

Rise of Majapahit empire
(मजपहित साम्राज्य का उत्कर्ष)

ई० पू० ८० के राजनीतिक रंगमंच पर जावा का महत्वपूर्ण स्थान है। इस साम्राज्य में कृतराजस नामक एक शासक का आगमन हुआ जिसने एक नये साम्राज्य का नामकरण किया जो मजपहित साम्राज्य के नाम से जाना जाता रहा। मजपहित साम्राज्य के उत्कर्ष में कृतराजस का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। कृतनगर काडिरी और सिंहसारी का शासक था जिन्हें कोई पुत्र नहीं था। बल्कि उन्हें केवल चार पुत्रियाँ थी चारो पुत्रियों का शादी विजय से हुआ। इस प्रकार कृतनगर साम्राज्य का उत्तराधिकारी विजय ही था। इन चारो रानियों में केवल गायत्री (राजपत्नी) को ही एक पुत्री हुई। इसने दो पुत्रियों का जन्म दिया। कृतराजस ने दूसरी शादी इन्द्रेश्वरी से किया जो कि मलयू प्रदेश की राजकुमारी थी। इन्द्रेश्वरी से एक जयनगर नामक पुत्र का जन्म लिया जिसको कृतराजस ने अपने जीवन काल में ही काडिरी का राजकुमार बना दिया जो कि बहुत दिनों तक जावा की राजधानी थी।

राजा विजय कृतराजस जयवर्द्धन के शासन काल के सम्बन्ध में विशेष जानकारी का अभाव है क्यों कि उनके सम्बन्ध में किसी तरह का विशेष जानकारी प्राप्त नहीं हुआ है 1292 ई० से 1309 ई० तक उसने मजपहित साम्राज्य पर शासन किया। 1309 ई० में कृतराजस की मृत्यु हो गई।

जयनगर

1309 में कृतराजस के मृत्यु के बाद मजपहित साम्राज्य पर उसका पुत्र जयनगर राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। जयनगर जब कम ही उम्र का था उसी समय इनके पिता कृतराजस की मृत्यु हो गई। इन्हें राजकार्य सम्बन्धी कोई अनुभव नहीं था उसके तत्पश्चात् जयनगर को विभिन्न तरह के संकटों का सामना करना पड़ा। इस साम्राज्य को हासिल करने के लिए जयनगर को बहुत सी बाधाओं का सामना करना पड़ा। जब तक कृतराजस मजपहित साम्राज्य पर विराजमान था तब तक किसी में साहस नहीं था कि इसके विरोध में आवाज उठा सकें। क्योंकि कृतराजस का व्यक्तित्व बहुत ही प्रतापी था। लेकिन ज्योंहि कृतराजस की मृत्यु हुई त्योंहि दबे हुए दुश्मन समय का अवसर पाकर विद्रोह की ज्वाला उठाने लगे।

Scanned with CamScanner

1309 ई० में पहला विरोधी रंगा लवे नामक-कर्मचारी था। यह विरोध बहुत ही गम्भीर था। लेकिन जयनगर बड़ा ही चतुरता से इस विरोध का सामना करना पड़ा। बाद में जयनगर के विरुद्ध बहुत से राज-पदाधिकारी विद्रोह का झण्डा लहराने लगे। राजनगर इन सभी विद्रोहों को कुचल डाला। लेकिन जयनगर को सिर्फ संघर्ष ही संघर्ष का सामना करना पड़ा। यह संघर्ष बहुत ही भयंकर रूप धारण करता रहा, क्योंकि-विद्रोह की भयंकर चिंगारी अपना रूप भी भयंकर-बना चुकी थी। 1310 ई० में इनके साथ राजपदाधिकारी ने भी विद्रोह का भयंकर रूप लिया। जिसके परिणाम-स्वरूप राजनगर को मजपहित साम्राज्य को छोड़कर दूसरे नगर आश्रय लेनी पड़ी। लेकिन कुछ कुटनीतिज्ञ पदाधिकारियों की मदद से वे मजपहित साम्राज्य की राजगद्दी प्राप्त की। इन्हें उच्च राजपदाधिकारी की सहायता से राजवैद्य द्वारा 1328 ई० में उसकी हत्या कर दी गयी। बालाद्वीप से प्राप्त अनुश्रुति के-अनुसार जयनगर ने अपने प्रधानमंत्री गजमद के पत्नी-के साथ बलात्कार करने का प्रयास किया जिसके तत्पश्चात् इस मुद्दा को लेकर विरोध होगया। प्रधानमंत्री गजमद ने राजवैद्य को मिलाकर जयनगर की हत्या कर दी। इस समय मजपहित साम्राज्य एक अत्यन्त शक्तिशाली राज्य था। 1323 के अभिलेख से जानकारी मिलती है। जयनगर का शासन जावा पर ही नहीं था बल्कि मदुराद्वीप तथा तंजुगपुर (बोर्नियो) पर भी था। 1321 ई० में ओडोरिक वान पोर्डेनन नामक यात्री ने द.पू.ए. की यात्रा कर अपने वृतान्त में लिखा कि जावा के राज्य के अन्तर्गत सात अन्य भी राज्य थे। चीन के साथ इस साम्राज्य के साथ बहुत ही मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध था। मजपहित साम्राज्य की तरफ से चीन में दूतमण्डल भेजा गया था।

राजपत्नी गायत्री :→

जयनगर के मृत्यु के बाद मजपहित साम्राज्य रिक्त हो गया क्योंकि जयनगर का कोई सन्तान नहीं था ताकि इस साम्राज्य की शोभा बढ़ा सके। इस स्थिति में मजपहित साम्राज्य की सिंहासन राजपत्नि गायत्री के हाथ सौंपा गया, गायत्री कृतनगर की पुत्री और मजपहित साम्राज्य के संस्थापक कृतराजस की अन्यतम पत्नि थी। गायत्री जयनगर की विमाता थी। मजपहित साम्राज्य का अधिकार गायत्री ने स्वीकार किया। चूंकि गायत्री बौद्धधर्म स्वीकार कर ली थी। गायत्री की पुत्री गीताजा अपनी माता की ओर से शासन संचालन करने लगी। गीताजा के शादी 1329 ई० में चक्रधर नामक एक कुलीन व्यक्ति से कर दिया गया

Scanned with CamScanner

इन्हें श्री कुमार की पदवी दी गयी। जो कृतवर्द्धन के नाम से जाना जाने लगा। इस समय सभी विद्रोहियों का दबा दिया गया। 1350 में राजपत्नी गायत्री की मृत्यु हो गयी।

<u>राजसनगर</u> :→

राजपत्नी गायत्री के मृत्यु के बाद गीतार्जा से उत्पन्न पुत्र को मजपहित साम्राज्य के राजसिंहासन को सौंपा गया। इसका नाम हयम वुरुक था जिसका उम्र इस समय सोलह साल (16 वर्ष) था। जो कि राजसनगर के नाम से मजपहित साम्राज्य पर आरूढ़ हुआ। माना जाता है कि ऐतिहासिक रंगमंच पर राजसनगर का महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक स्थान है। राजसनगर के शासन काल में मजपहित साम्राज्य का उत्कर्ष हुआ। जिसने अपने शासन काल में साम्राज्य की सीमा का विस्तार चरम सीमा पर मजपहित साम्राज्य की सीमा का विस्तार चरम सीमा पर पहुँचा दिया।

राजसनगर एक अत्यन्त महत्वाकांक्षी व्यक्ति था। 1357 ई० में राजसनगर के साथ सुण्डा की राजकुमारी से विवाह तय हुआ। वहाँ के महाराज मजपहित सम्राट को अपना आधिपत्य स्वीकार करते थे। राजसनगर ने पड़ोस के देशों पर आक्रमण कर मजपहित साम्राज्य को विशाल साम्राज्य का रूपरेखा तैयार किया।

राजसनगर एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति था इसलिए इनके दिमाग में दिग्विजय की भी भावनाओं की ओर काफी झुकाव था। राजसनगर ने दोनों द्वीप पर आक्रमण कर अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। उसने जो दिग्विजय प्रारम्भ की इसके परिणाम स्वरूप सभी द्वीप और प्रदेश के राजाओं ने अधीनता स्वीकार कर ली। इस राजा के शासन काल में <u>1365</u> नागर-कृतागम नामक ग्रन्थ की रचना की गई। नागरकृतागम नामक ग्रन्थ में राजसनगर द्वारा विजित प्रदेशों एवं द्वीपों की सूची की चर्चा की गई है। द० पू० ए० के क्षेत्र में फिलिपीन नामक एक ऐसा द्वीप समूह था जो कि मजपहित साम्राज्य में सम्मिलित नहीं था। नागरकृतागम नामक ग्रंथ रचयीता राजसनगर का ~~आश्रित~~ दरबारी कवि था। राजसनगर सम्बन्धी बहुत से अभिलेख प्राप्त हुए है जिसमें राजसनगर के प्रभुत्व की चर्चा पायी गयी है।

यह सत्य है कि राजसनगर एक प्रतापी एवं महत्वांकाक्षी सम्राट था जिसका साम्राज्य द० पू० ए० में दूर-दूर तक फैला था। नागरकृतागम

Scanned with CamScanner

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि राजसनगर का किन-किन पड़ोसी देशों के साथ मैत्री सम्बन्ध था। राजसनगर के शासन काल में जो मजपहित साम्राज्य का उत्कर्ष हुआ उसमें मुख्य श्रेय गजःमद को दिया जाता है। जो कि अपनी योग्यता से एक सुशासित राज्य बनाया था। इस विशाल साम्राज्य को मजपहित साम्राज्य के नाम से जाना जाता रहा। 1389 ई० में राजसनगर की मृत्यु हो गयी। मजपहित साम्राज्य के लिए उत्कर्ष के लिए राजसनगर का भी महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है।